गलियों की सफाई नियमित रूप से नहीं की जाती। कूड़ा करकट के अंबार एकत्र हैं। मलमूत्र भी सड़कों और गलियों में बहते रहते हैं। लगता है कि इन बातों की खोज खबर भी कोई नहीं लेता। इनके लिए भारत सरकार से जो यदाकदा धन मिलता है उसका भी दुरुपयोग ही होता है। हां, जवाब जरूर मिल जाता है कि सब स्थिति ठीक है।

दानापुर छावनी के अन्तर्गत पीने के पानी की समस्या सबसे विकट है। पुराने नल कूप की मरम्मत न जाने कितनी बार कराई गई, फिर भी उससे पानी की सप्लाई ठीक प्रकार से नहीं होती। लाखों रुपये खर्चकर नया नलकूप निर्मित किया गया है। परन्तु, महीनों बीत गये, उसे चालू अब तक नहीं किया गया है। पता नहीं, क्या माजरा है?

लोगों की शिकायत है कि दानापुर छावनी बोर्ड के पदाधिकारी समस्याओं का समाधान निकालने में असफल रहे हैं।

अतः रक्षा मंत्री से मेरा अनुरोध होगा कि वह व्यक्तिगत हस्तक्षेप कर वहां के नागरिकों की समस्याओं का समाधान निकालें और अधिकारियों को नियंत्रित करें।

(ii) Need for development of sport facilities in rural areas.

श्री भोखा भाई (बांसवाड़ा) : अध्यक्ष महोदय, नियम 377 के अधीन मैं निम्नलिखित लोकमहत्व के विषय की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं :

कहने को तो 1972 से अखिल भारतीय खेलकूद परिषद् की सिफारिश पर केन्द्रीय शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय ने अखिल ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित करना प्रारंभ कर दिया था परंतु संबंधित मंत्रालय ने ग्रामीण इलाकों में आज तक कोई खेल मैदान निर्मित नहीं किए हैं। खेलकूद सुविधाएं, खेल के मैदान, ट्रैण्ड कोचिंग और अन्य खेल यंत्र भी जुटाने चाहिए। अन्यथा वर्तमान भारतीय खेलों के गिरते स्तर को कोई रोक नहीं सकता। कहने को कई लोग बोलते हैं कि ग्रामीण इलाकों में खेल मैदानों के मैदान खाली पड़े रहते हैं। परन्तु असलियत में ऐसा नहीं है। हाकी, फुटबाल, वास्केटबाल, खो-खो, जिमनास्टिक व तैराकी तो बिना किसी मैदानों के खेले नहीं जा सकते।

निस्सन्देह ग्रामीण कोचेज योजना के तहत एस० आई० एस० पटियाला के मातहत भारत के विभिन्न भागों में कुछेक कोंचिग सेंटर जरूर कार्यरत हैं जो नेहरू युवक केन्द्र के नाम से जाने जाते हैं परन्तु देश में बसी ग्रामीण आबादी को नजर-अन्दाज करें तो इन केन्द्रों के तहत कार्यरत कोचेज की संख्या नहीं के बराबर है। इस समय लगभग 428 कोचेज इन केन्द्रों में कोंचिग कर रहे हैं जो इस विशाल ग्रामीण क्षेत्र को देखते हुए आटे में नमक के समान भी नहीं हैं। बिना प्रापर कोंचिग के ग्रामीण खिलाड़ी गलत तरीके से खेलने लग जाते हैं व उसी गलत टेकनीक को डेबलप कर लेते हैं और जब सरकार प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की खोज हेतु ग्रामीण खेलों का आयोजन करती है तो 90 प्रतिशत खिलाड़ी गलत तरीके से टेकनीक को डेवलप किए पाये जाते हैं। इसलिए जब तक प्राइमरी स्तर से कोंचिग का सिलसिला शुरू नहीं होता चैम्पियन बनने के सपने साकार होने मुश्किल लगते हैं। यदि खेलों के स्तर को ऊंचा उठाना है तो ग्रामीण इलाकों में खेल सुविधाएं उपलब्ध करानी होंगी, खेलों का माहौल पैदा करने के लिए स्टेडियस खोलने होंगे, आधुनिकतम खेलों के साज सामान जुटाने होंगे, खाली दर दर की ठोकरें खा रहे एन० आई० एस० कोचेज को कोंचिग कार्यों में लगाना होगा। कम से कम ब्लाक स्तर पर बड़े-बड़े कोंचिग सेंटर खोलने होंगे। तभी हमें ग्रामीण क्षेत्र से प्रतिभाशाली खिलाड़ी मिल सकेंगे जो देश की खोई हुई इज्जत को वापस दिला सकेंगे।